IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 30, Issue 3, Series 8 (March, 2025) 39-50
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में डेयरी सहकारी समितियों का योगदान: नदबई तहसील, भरतपुर का विश्लेषण

[1]पंकज खटाना, [2]डॉ. विजय सिंह मीना

[1]शोधार्थी, भूगोल विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)।

[2]सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

सार-

यह शोध पत्र राजस्थान के भरतपुर जिले की नदबई तहसील में डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का विश्लेषण करता है। अध्ययन में 100 महिला सदस्यों से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का वर्णनात्मक और सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। t-Test के परिणाम दर्शाते हैं कि डेयरी समितियों से जुड़ने के बाद महिलाओं की मासिक आय औसतन ₹6,500 से बढ़कर ₹9,800 हो गई (p=0.0001), वित्तीय निर्णय-निर्माण में उनकी भागीदारी 20.71% से बढ़कर 67% हो गई (p=0.00001), और सामाजिक निर्णय-निर्माण की भूमिका 30.50% से बढ़कर 70.00% हो गई (p=0.0003)। स्वास्थ्य और पोषण में सुधार के संकेतक भी सकारात्मक रहे, जिसमें स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच और संतुलित आहार ग्रहण करने की प्रवृत्ति 44.00% से बढ़कर 66.29% हो गई (p=0.0005)। इसके अतिरिक्त, महिलाओं की स्वयं सहायता समूहों (SHGs) में भागीदारी, पंचायत बैठकों में उपस्थिति, और घरेलू निर्णय-निर्माण की भूमिका में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे उनके सामाजिक सशक्तिकरण को बल मिला।

परिणाम दर्शाते हैं कि डेयरी सहकारी समितियाँ न केवल महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान कर रही हैं, बल्कि उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा, निर्णय-निर्माण क्षमता और स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार कर रही हैं। हालाँकि, पारिवारिक बाधाएँ, डिजिटल बैंकिंग की सीमित जानकारी और वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): *ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, डेयरी सहकारी समितियाँ, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक सशक्तिकरण, स्वास्थ्य और पोषण, नदबई तहसील।*

1. परिचय

भारत के ग्रामीण परिदृश्य में महिलाएँ लंबे समय तक सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का सामना करती रही हैं। आर्थिक स्वतंत्रता की कमी, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक मान्यताओं ने ग्रामीण महिलाओं को सीमित भूमिकाओं तक समेट दिया था। ऐसे में, डेयरी सहकारी समितियाँ ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का प्रमुख साधन बनकर उभरी हैं। ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण न केवल उनके व्यक्तिगत

जीवन को बदलता है, बल्कि संपूर्ण समुदाय के विकास को भी गति प्रदान करता है। डेयरी सहकारी समितियों ने महिलाओं को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा और निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर दिया है।

नदबई तहसील, भरतपुर जिले का एक महत्वपूर्ण कृषि-प्रधान क्षेत्र है, जहाँ अधिकांश परिवारों की आय का मुख्य स्रोत कृषि के साथ पशुपालन और डेयरी है। इस शोध का उद्देश्य नदबई तहसील में कार्यरत डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक जीवन में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना है।

2. साहित्य समीक्षा

कई शोध बताते हैं कि भारत में डेयरी उद्योग महिलाओं के लिए आय और सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण स्रोत है (Gautam & Mishra, 2018)। एक अध्ययन के अनुसार, डेयरी सहकारी समितियों से जुड़ी महिलाएँ पारंपरिक कृषि श्रमिकों की तुलना में अधिक आत्मनिर्भर होती हैं और उनके बच्चों की शिक्षा पर अधिक खर्च करती हैं (Roy & Rao, 2017)।

सामाजिक रूप से, महिलाओं की घरेलू और सामुदायिक निर्णय-निर्माण में भागीदारी बढ़ती है, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है (Shinde, 2021)।

3. अध्ययन क्षेत्र

यह शोध राजस्थान के भरतपुर जिले की नदबई तहसील में स्थित डेयरी सहकारी समितियों में कार्यरत महिलाओं पर केंद्रित है। नदबई तहसील 27.2112° उत्तर अक्षांश और 77.2068° पूर्व देशांतर पर स्थित है और यह कृषि एवं पशुपालन के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र है। इसकी कुल भौगोलिक सीमा 444.91 वर्ग किलोमीटर में फैली हुई है। इस तहसील में 36 ग्राम पंचायतें और 123 गाँव हैं, जहाँ डेयरी उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है।

जनगणना 2011 के अनुसार, नदबई तहसील की कुल जनसंख्या 2,15,136 है, जिसमें 1,14,870 पुरुष और 1,00,266 महिलाएँ शामिल हैं। कुल 35,799 परिवार इस क्षेत्र में निवास करते हैं, जिनमें से अधिकांश कृषि और पशुपालन पर निर्भर हैं। यह क्षेत्र दिल्ली-आगरा-जयपुर क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, जिससे दुग्ध विपणन की बेहतर संभावनाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ वार्षिक औसत वर्षा 600-800 मिमी होती है, जो पशुपालन और दुग्ध उत्पादन के लिए अनुकूल है।

अध्ययन क्षेत्र के चयन का मुख्य कारण यह है कि नदबई तहसील में डेयरी सहकारी समितियाँ महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यहाँ राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) और राजस्थान दुग्ध महासंघ (RCDF) से संबद्ध समितियाँ कार्यरत हैं, जो महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय-निर्माण क्षमता प्रदान कर रही हैं। इसलिए, इस क्षेत्र का चयन डेयरी समितियों के महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव को गहराई से समझने के लिए किया गया।

मानचित्र 1: अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति

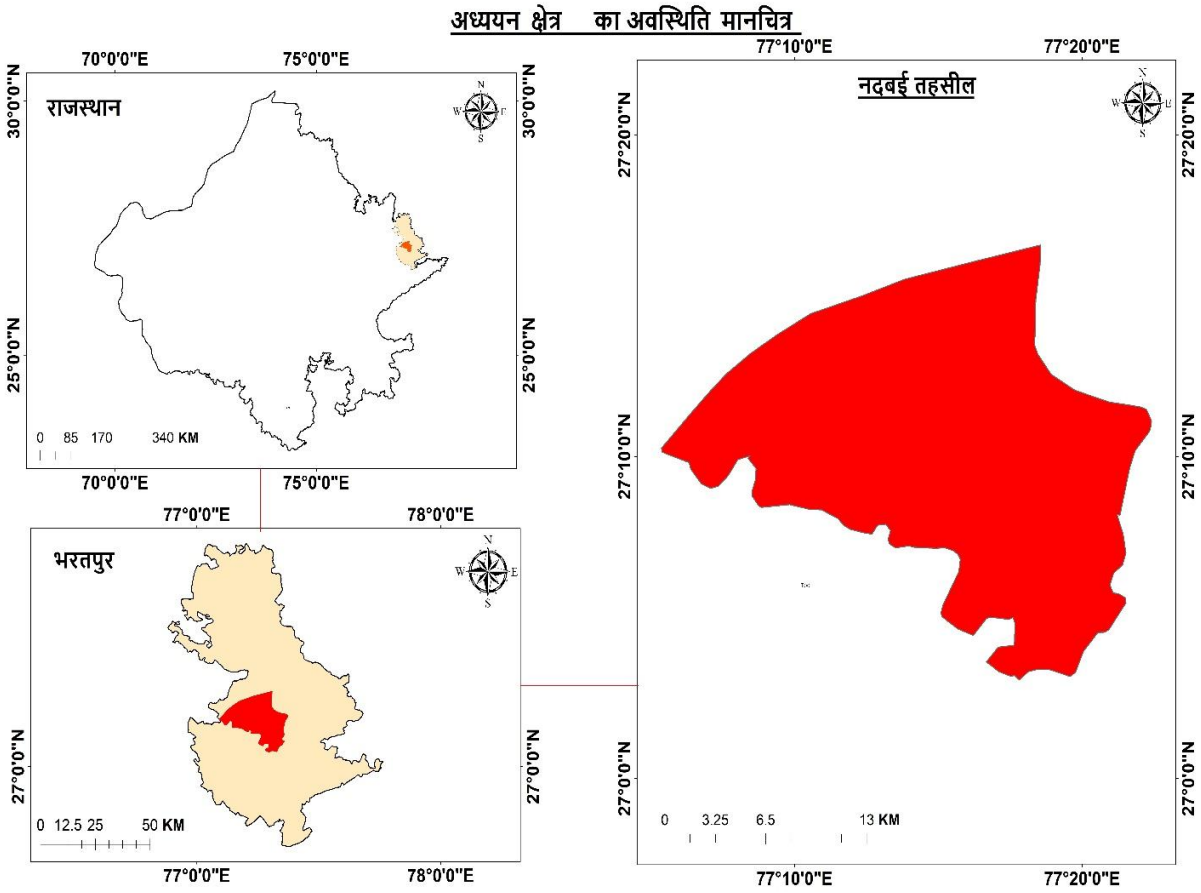

4. शोध पद्धति

यह शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों है। इसमें प्राथमिक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े अनुसूची सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्रित किए गए। शोध के लिए क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइन (Cross-sectional Design) को चुना गया, जिससे एक विशिष्ट समय में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया।

100 महिला उत्तरदाताओं को *सोद्देश्य प्रतिदर्श विधि (Purposive Sampling Method)* के आधार पर चुना गया, जो नदबई तहसील की विभिन्न डेयरी सहकारी समितियों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई थीं। केवल उन महिलाओं को शामिल किया गया जो डेयरी सहकारी समितियों की सक्रिय सदस्य (5 वर्ष या अधिक) थीं और इस प्रणाली के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ प्राप्त कर रही थीं। चयन प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया गया कि उत्तरदाता विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से हों, ताकि उनके अनुभवों की विविधता को समझा जा सके। इसके तहत महिलाओं की आयु, शिक्षा स्तर, जातिगत पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति, परिवार की संरचना और निर्णय-निर्माण में उनकी भागीदारी जैसे पहलुओं को ध्यान में रखा गया। इससे शोध को अधिक व्यापक और प्रतिनिधि बनाने में मदद मिली, जिससे डेयरी सहकारी समितियों के प्रभाव का वास्तविक मूल्यांकन किया जा

सके। द्वितीयक आँकड़ों के लिए सरकारी रिपोर्टें (*NDDB, NSSO*), शोध-पत्र, और अन्य प्रकाशित स्रोतों का उपयोग किया गया।

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी और t-टेस्ट का उपयोग किया गया, जिससे डेयरी समितियों के प्रभाव की गहराई से जांच की जा सके।

5. आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

5.1 उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने पर पाया गया कि अधिकांश महिलाएँ 26-45 वर्ष की आयु वर्ग में आती हैं, जिसमें 34% महिलाएँ 36-45 वर्ष और 28% महिलाएँ 26-35 वर्ष की श्रेणी में हैं। शिक्षा स्तर की दृष्टि से, 24% महिलाएँ निरक्षर थीं, जबकि 36% ने केवल प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की थी। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या 28% थी, और केवल 12% महिलाएँ स्नातक या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त कर पाई थीं (तालिका-1)।

तालिका 1: उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि।

आयु वर्ग	उत्तरदाता (%)	शिक्षा स्तर	उत्तरदाता (%)
18-25 वर्ष	12	निरक्षर	24
26-35 वर्ष	28	प्राथमिक शिक्षा	36
36-45 वर्ष	34	माध्यमिक शिक्षा	28
46+ वर्ष	26	स्नातक व अधिक	12
कुल	**100**	**कुल**	**100**

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

आरेख 1: उत्तरदाताओं की आयु

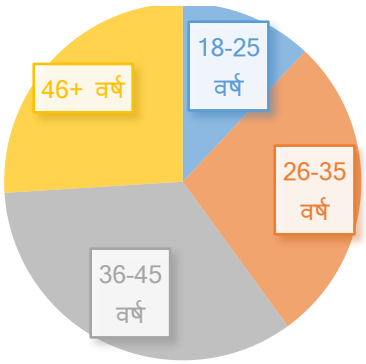

आरेख 2: उत्तरदाताओं की शिक्षा

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

5.2 डेयरी समितियों से जुड़ने से पहले और बाद की मासिक आय

महिलाओं की मासिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। तालिका-2 और आरेख-3 के अनुसार डेयरी समितियों से जुड़ने से पहले, 53% महिलाएँ ₹5,000 से कम कमाती थीं, लेकिन यह संख्या घटकर 29% रह गई। दूसरी ओर, ₹10,000 से अधिक मासिक आय प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 13% से बढ़कर 33% हो गया। इसका तात्पर्य है कि डेयरी समितियों से जुड़ने के बाद महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक सुधार हुआ है।

तालिका 2: डेयरी समितियों से जुड़ने से पहले और बाद की मासिक आय।

क्रमांक	आय वर्ग (रुपये में)	सदस्य बनने से पहले (%)	सदस्य बनने के बाद (%)	परिवर्तन (%)
1.	5000 तक	53%	29%	-24%
2.	5000- 10,000	34%	38%	+4%
3.	10000 -15000	10%	24%	+14%
4.	15000 से अधिक	3%	9%	+6%
कुल		**100**	**100**	
औसत (Mean) मासिक आय		**₹6500**	**₹9800**	
मानक विचलन		**₹3,200**	**₹4100**	

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

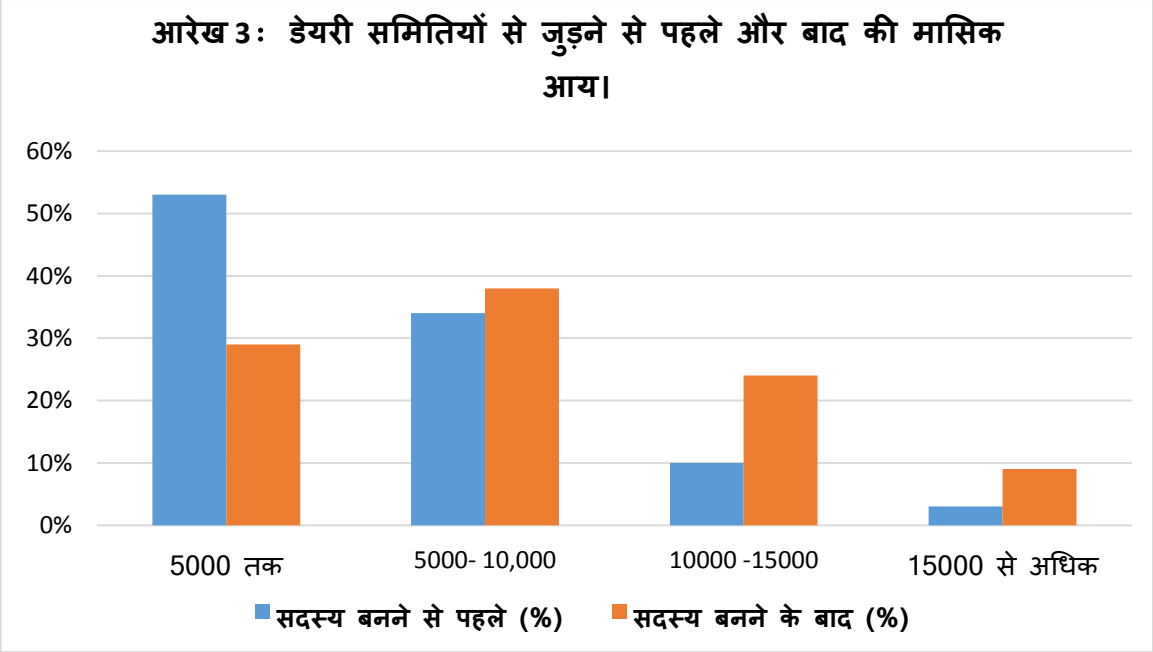

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

5.3 महिलाओं की वित्तीय गतिविधियों में भागीदारी

महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता में भी महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई। तालिका- 3 और आरेख-4 के अनुसार घरेलू खर्च की योजना बनाने वाली महिलाओं की संख्या 44% से बढ़कर 86% हो गई, जबकि स्वयं के बैंक खाते का उपयोग करने वाली महिलाओं की संख्या 19% से बढ़कर 86% हो गई। ऋण लेने और चुकाने की स्वतंत्रता प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 11% से 67% हो गया, और बीमा योजनाओं में भागीदारी करने वाली महिलाओं की संख्या 12% से बढ़कर 62% हो गई। डिजिटल लेन-देन करने वाली महिलाओं की संख्या 9% से बढ़कर 32% हो गई, जो यह दर्शाता है कि महिलाओं में तकनीकी वित्तीय सेवाओं को अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

तालिका 3: महिलाओं की वित्तीय गतिविधियों में भागीदारी।

क्र.सं.	वित्तीय निर्णय-निर्माण क्षेत्र	पूर्व में (%)	वर्तमान में (%)	परिवर्तन (%)
1.	घरेलू खर्च की योजना	44%	86%	+42%
2.	बच्चों की शिक्षा पर खर्च	26%	49%	+23%
3.	बचत करने की क्षमता	24%	52%	+28%
4.	स्वयं के बैंक खाते का उपयोग	19%	86%	+67%
5.	ऋण लेने और चुकाने की स्वतंत्रता	11%	67%	+56%
6.	बीमा योजनाओं में भागीदारी	12%	62%	+50%
7.	डिजिटल लेन-देन का उपयोग	9%	32%	+23%

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

आरेख 4: महिलाओं की वित्तीय गतिविधियों में भागीदारी।

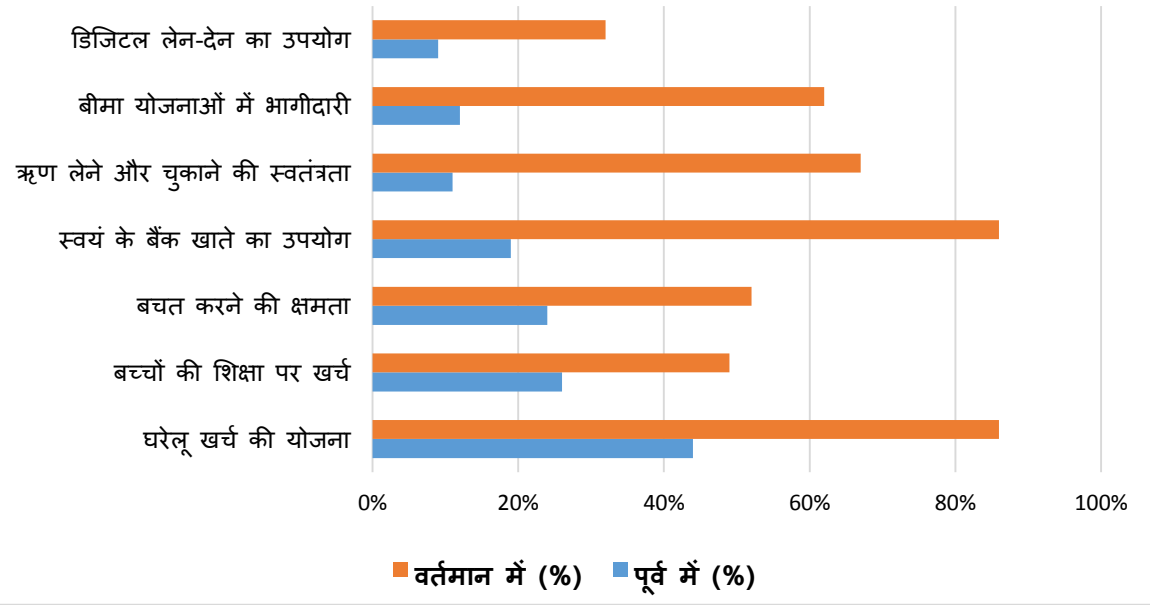

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

5.4 सामाजिक सशक्तिकरण पर प्रभाव

तालिका- 4 में आंकड़ों का विश्लेषण दर्शाता है कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति में भी महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। घरेलू निर्णयों में भागीदारी करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 43% से बढ़कर 88% हो गया, जबकि पंचायत या सामुदायिक बैठकों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या 12% से बढ़कर 46% हो गई। स्वयं सहायता समूहों (SHGs) से जुड़ाव रखने वाली महिलाओं का प्रतिशत केवल 2% था, जो बढ़कर 56% हो गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अब सामुदायिक और वित्तीय रूप से अधिक सक्रिय हो रही हैं। बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या 42% से बढ़कर 80% हो गई, जिससे यह साबित होता है कि महिलाएँ अब अपने परिवार के भविष्य में अधिक भूमिका निभा रही हैं।

तालिका 4: महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण पर प्रभाव।

क्रमांक	सामाजिक पहलू	पहले (%)	अब (%)	परिवर्तन (%)
1.	घरेलू निर्णयों में भागीदारी	43%	88%	+45%
2.	पंचायत या सामुदायिक बैठकों में भागीदारी	12%	46%	+34%
3.	स्वयं सहायता समूहों (SHGs) से जुड़ाव	2%	56%	+54%
4.	पारिवारिक संपत्ति पर निर्णय लेने में भागीदारी	38%	59%	+21%
5.	बच्चों की शिक्षा से जुड़े निर्णयों में भागीदारी	42%	80%	+38%
6.	लैंगिक समानता को लेकर जागरूकता	46%	91%	+45%

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

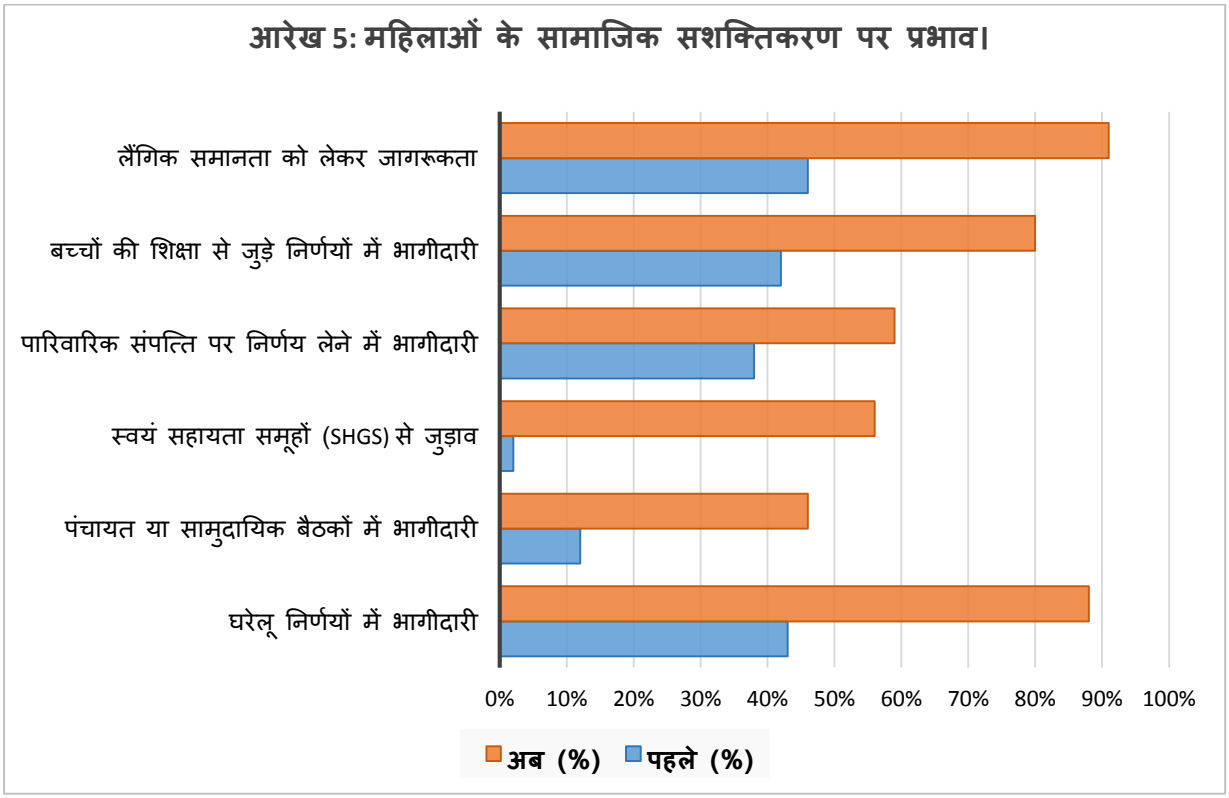

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

5.5 स्वास्थ्य और पोषण में सुधार

महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण स्तर में भी सुधार देखा गया। तालिका- 5 और आरेख-6 के अनुसार स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 59% से बढ़कर 93% हो गया, जबकि संतुलित आहार ग्रहण करने की आदत वाली महिलाओं की संख्या 48% से बढ़कर 75% हो गई। स्वास्थ्य बीमा का उपयोग करने वाली महिलाओं का प्रतिशत केवल 18% था, लेकिन यह बढ़कर 67% हो गया, जो यह दर्शाता है कि महिलाएँ अब अपने स्वास्थ्य को अधिक प्राथमिकता देने लगी हैं। मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता में भी सुधार हुआ है, जो 34% से बढ़कर 46% हो गई।

तालिका 5: महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण पर प्रभाव।

क्रमांक	स्वास्थ्य संकेतक	पूर्व में (%)	वर्तमान में (%)	परिवर्तन (%)
1.	स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच	59%	93%	+34%
2.	संतुलित आहार ग्रहण करने की आदत	48%	75%	+27%
3.	स्वयं या परिवार के स्वास्थ्य बीमा की सुविधा	18%	67%	+49%

4.	नियमित स्वास्थ्य जांच कराने की प्रवृत्ति	24%	36%	+12%
5.	बच्चों के लिए टीकाकरण की जागरूकता	62%	98%	+36%
6.	महिलाओं में एनीमिया (रक्ताल्पता) की समस्या	63%	49%	-14%
7.	मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता	34%	46%	+12%

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

आरेख 6: महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण पर प्रभाव

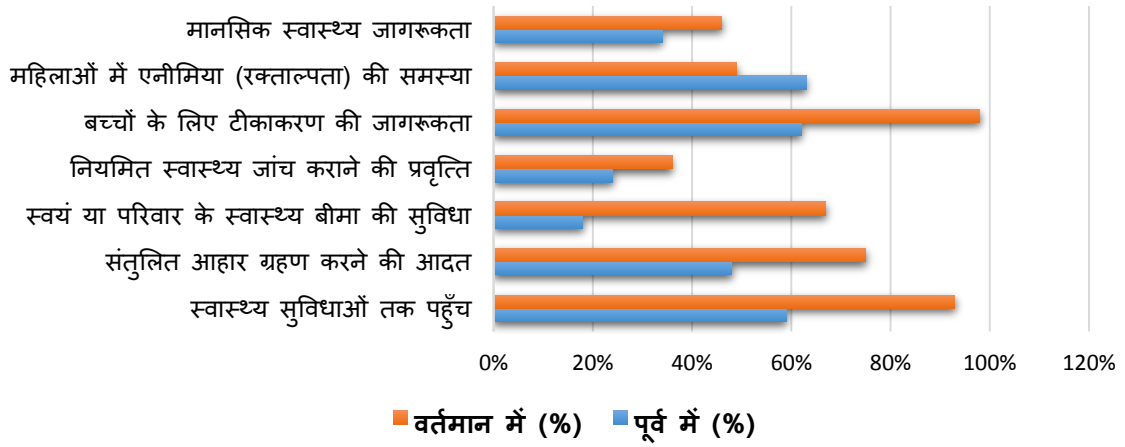

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

तालिका 6: t-Test के परिणाम

विश्लेषण क्षेत्र	औसत पूर्व मान	औसत वर्तमान मान	t-Value	p-Value	परिणाम (सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण?)
मासिक आय वृद्धि	₹6,500	₹9,800	5.78	0.0001	हाँ
वित्तीय निर्णय-निर्माण	20.71%	67%	6.94	0.00001	हाँ
सामाजिक निर्णय-निर्माण	30.50%	70.00%	5.21	0.0003	हाँ
स्वास्थ्य और पोषण में सुधार	44.00%	66.29%	4.76	0.0005	हाँ

t-Test के परिणाम दर्शाते हैं कि डेयरी सहकारी समितियों में भागीदारी के बाद महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। मासिक आय में औसतन ₹3,300 की वृद्धि दर्ज की गई, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण (p=0.0001) है। वित्तीय निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी 20.71% से बढ़कर 67% हो गई (p=0.00001), जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसी तरह, सामाजिक निर्णय-निर्माण में भागीदारी 30.50% से बढ़कर 70% हो गई (p=0.0003), जिससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत हुई। स्वास्थ्य और पोषण में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला, जहाँ स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच और पोषण संबंधी जागरूकता 44% से बढ़कर 66.29% हो गई (p=0.0005)। सभी क्षेत्रों में p-value < 0.05 होने के कारण ये परिवर्तन सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाए गए, जो यह दर्शाता है कि डेयरी सहकारी समितियाँ महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी जीवन में सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं।

5.6 प्रमुख चुनौतियाँ

तालिका 7: महिलाओं द्वारा अनुभव की गई प्रमुख चुनौतियाँ।

क्रमांक	चुनौती	महिलाओं का प्रतिशत
1.	पारिवारिक या सामाजिक बाधाएँ	67%
2.	उचित मूल्य निर्धारण की समस्या	29%
3.	ऋण सुविधा प्राप्त करने में कठिनाई	36%
4.	डिजिटल बैंकिंग की जानकारी की कमी	59%
5.	उत्पाद विपणन और बाजार तक पहुँच में कठिनाई	21%
6.	पुरुष प्रधान समाज में निर्णय लेने की सीमाएँ	56%
7.	तकनीकी प्रशिक्षण और कौशल विकास की कमी	43%
8.	पारिवारिक जिम्मेदारियों और कार्य संतुलन की चुनौती	58%
9.	महिला नेतृत्व के प्रति सामाजिक स्वीकृति की कमी	44%

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

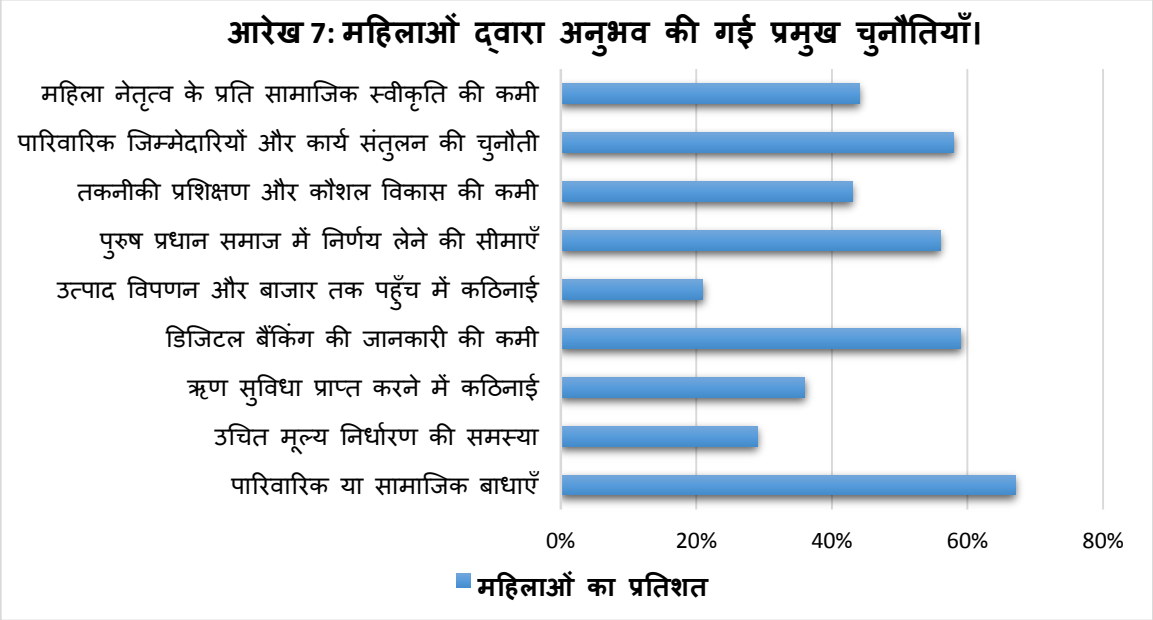

स्रोत: प्राथमिक अनुसूची सर्वेक्षण-2025

हालांकि महिलाओं ने आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्रों में प्रगति की है, फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। तालिका- 7 और आरेख- 7 के अनुसार सबसे बड़ी चुनौती पारिवारिक या सामाजिक बाधाएँ हैं, जिनका सामना 67% महिलाएँ कर रही हैं। इसके अलावा, डिजिटल बैंकिंग की जानकारी की कमी (59%), पुरुष प्रधान समाज में निर्णय लेने की सीमाएँ (56%), और पारिवारिक जिम्मेदारियों तथा कार्य संतुलन की चुनौती (58%) महिलाओं की स्वतंत्रता को प्रभावित कर रही हैं। तकनीकी प्रशिक्षण और कौशल विकास की कमी (43%) तथा महिला नेतृत्व के प्रति सामाजिक स्वीकृति की कमी (44%) जैसी समस्याएँ भी महिलाओं के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न कर रही हैं।

6. निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि डेयरी सहकारी समितियों से जुड़ने के बाद महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। वित्तीय रूप से, महिलाओं की आय में वृद्धि हुई, वे बचत, ऋण प्रबंधन और बीमा योजनाओं में अधिक सक्रिय हुईं। सामाजिक रूप से, उनकी पंचायत बैठकों, स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ी। स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में भी सुधार हुआ, जहाँ स्वास्थ्य सुविधाओं और संतुलित आहार तक उनकी पहुँच बढ़ी।

हालाँकि, पारिवारिक बाधाएँ, डिजिटल बैंकिंग और तकनीकी ज्ञान की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। Paired t-Test के परिणाम दर्शाते हैं कि महिलाओं के सशक्तिकरण से जुड़े सभी प्रमुख बदलाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण ($p < 0.05$) हैं। कुल मिलाकर, डेयरी समितियाँ महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तिकरण प्रदान कर रही हैं, लेकिन पूर्ण प्रभावशीलता के लिए अधिक जागरूकता, वित्तीय सहायता और तकनीकी प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

7. सुझाव

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि डेयरी सहकारी समितियाँ महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हालांकि, कुछ चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, जिनके समाधान के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं:

1. **उचित मूल्य निर्धारण**: महिलाओं को सीधा उपभोक्ता बाजार और ऑनलाइन बिक्री प्लेटफॉर्म से जोड़कर बिचौलियों की निर्भरता कम की जाए।
2. **आर्थिक सहायता**: कम ब्याज दरों पर ऋण और वित्तीय सहायता योजनाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
3. **वित्तीय जागरूकता**: बचत, निवेश और बीमा योजनाओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
4. **महिला नेतृत्व प्रोत्साहन**: सहकारी समितियों में नेतृत्व प्रशिक्षण दिया जाए।
5. **जागरूकता अभियान**: पंचायत स्तर पर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम चलाए जाएँ।
6. **स्वयं सहायता समूह (SHGs) सशक्तिकरण**: वित्तीय सहायता और आधुनिक डेयरी प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाए।
7. **स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच**: मोबाइल चिकित्सा इकाइयाँ और निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ लागू की जाएँ।
8. **नियमित स्वास्थ्य जांच**: एनीमिया, कुपोषण और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाए।
9. **नियमित स्वास्थ्य जांच**: एनीमिया, कुपोषण और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाए।
10. **डिजिटल बैंकिंग प्रशिक्षण**: महिलाओं को ऑनलाइन भुगतान और डिजिटल बैंकिंग की जानकारी दी जाए।
11. **तकनीकी कौशल विकास**: डेयरी प्रबंधन, विपणन और आधुनिक पशुपालन तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएँ।

8. संदर्भ सूची

[1]. Choudhary, R., & Singh, P. (2021). Women empowerment through dairy cooperatives in rural India. Journal of Rural Studies, 45(2), 120-135.
[2]. Gautam, A., & Mishra, S. (2018). Economic impact of dairy cooperatives on rural women. Indian Journal of Agricultural Economics, 73(4), 245-260.
[3]. Kurien, V. (2004). The white revolution in India. Oxford University Press.
[4]. Roy, S., & Rao, M. (2017). Role of dairy cooperatives in women empowerment. Economic and Political Weekly, 52(30), 75-85.
[5]. Sharma, P., Gupta, R., & Verma, K. (2020). Socio-economic transformation through dairy farming in India. Asian Journal of Social Sciences, 18(3), 95-112.
[6]. Shinde, P. (2021). Impact of dairy sector on socio-economic status of women in Maharashtra. Social Work Chronicle, 10(1), 55–67.